पाठ 1 **दिसम्बर 30-जनवरी 5**

भौतिकवाद का प्रभाव

सब्त अपराह्न **दिसम्बर 30**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : 1यूहन्ना 2: 16,17; लूका 14: 26-33; 12: 15-21; व्यवस्था० 8: 10-14; 1तीमु० 6: 10; यूहन्ना 15: 5; गला० 2: 20 ।

याद वचनः *"और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोम० 12: 2)।*

परमेश्वर का वचन अपने लोगों से "इस संसार के सदृश न बनने" को कहता है (रोम० 12: 2), परन्तु भौतिकवाद का आकर्षण, दौलत के लिये अमर्यादित लालसा एवं हम जो सोचते हैं कि दौलत ला सकती है, वह शक्तिशाली है। बहुत कम लोग क्या धनी क्या गरीब भौतिकवाद की पहुँच के बाहर है। यह मसीहियों को भी शामिल करता है।

धनवान होना या कठिन परिश्रम करके स्वयं के लिये और अपने प्रियजनों के लिये सुविधा व्यवस्था करना गलत नहीं है। परन्तु जब रुपये या रुपये का शौक घेर लेता है हम शैतान के फंदे में गिर जाते हैं और सचमुच "इस संसार के सदृश" बन जाते हैं।

संसार इस विचार को प्रगट करता है कि अच्छा जीवन, जीवन की प्रचुरता केवल पैसों से प्राप्त की जा सकती है। परन्तु पैसा एक नकाब है जिसके पीछे शैतान छिपा होता है ताकि वह हमारी निष्ठा को प्राप्त कर सके। भौतिकवाद मसीहियों के खिलाफ चुनाव के शैतान के हथियारों में से एक है। आखिरकार पैसे कौन नहीं चाहता और पैसे हमें यहाँ और अभी क्या ला सकता है? इसकी महानतम उपलब्धि क्षणिक तृप्ति है, परन्तु अंत में यह हमारी गहनतम जरूरतों का उत्तर नहीं दे सकता।

रविवार **दिसम्बर 31**

इस संसार का परमेश्वर

पैसा इस संसार का परमेश्वर और भौतिकवाद इसका धर्म बन गया है। भौतिकवाद एक बनावटी और घातक तंत्र है जो अस्थायी सुरक्षा प्रदान करता है पर अंतिम सुरक्षा नहीं।

- सब्त जनवरी 6 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

जैसा हम यहाँ विश्लेषण करते हैं, भौतिकवाद वह है जब दौलत और अधिकारों की लालसा अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है और आत्मिक सच्चाईयों की अपेक्षा अधिक मूल्यवान हो जाती है। अधिकारों के मोल हो सकते हैं लेकिन उनके मोल को हमें नियंत्रित नहीं करना चाहिए। "जो रुपये से प्रीति रखता है वह रुपये से तृप्त न होगा; और न जो बहुत धन से प्रीति रखता है, लाभ से यह भी व्यर्थ है" (सभोप० 5:10), इस संसार की वस्तुओं की इच्छा करने में यही समस्या है: कोई फर्क नहीं हम कितना पाते हैं, यह कभी तृप्त नहीं होता; हम अधिक से अधिक प्राप्त करने के लिये कठिनाई पूर्वक प्रयास करते हैं जो हमें कभी संतुष्ट नहीं कर सकता। एक फंदे के विषय बात करें।

पढ़ें 1यूहन्ना 2:16-17. वास्तविक मामले के विषय यह पदस्थल हमें क्या बतलाता है?

_____

_____

पढ़ें लूका 14:26-33. मसीहियों के लिये उच्चत्तर अहमियत के विषय यहाँ यीशु हमें क्या बतला रहा है?

_____

_____

संभवत: यह ऐसा कहा जा सकता है: उन्हें जिनके लिये रुपये या रुपये की लालसा एक सर्वोपयोगी वास्तविकता बनती है उन्हें सचमुच कीमत गिन लेनी चाहिए। "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?" (मार्क 8:36)।

"जब मसीह जगत में आया, मानवता ने अपने नीचतम स्तर को तीव्र गति से छूता हुआ महसूस किया। समाज की नींवें कमज़ोर हो गई थीं। जीवन झूठा और बनावटी हो गया था..... समस्त संसार में धर्म के सारे तंत्र (प्रणाली) दिलो-दिमाग पर से अपनी पकड़ खो दे रहे थे। कहानी और असत्यता से तंग आकर, विचारों में डूबते हुए, मनुष्य बेवफाई और भौतिकवाद की ओर मुड़ गया। अपने अनुमान के बाहर अनंत में जीते हुए, उन्होंने वर्तमान में जीवन जीया।" – एलेन जी० ह्वाईट, एजुकेशन, पेज 74-75।

लोग बेवफाई और भौतिकवाद में डूब गये और केवल वर्तमान के लिये जीने लगे? यह परिचित लगता है?

कौन चीजें हासिल करना नहीं चाहता? प्रश्न है: हम कैसे जान सकते हैं कि चीजें जो हम हासिल करते हैं, अधिक न भी हों, हमें ही हासिल कर

लेती हैं? हमें केवल किसे हासिल करना चाहिए, और हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि उसने हमें हासिल कर लिया है?

सोमवार **जनवरी 1**

बाड़ों को भरना

पढ़ें लूका 12: 15-21. हमारे लिये यहाँ पर क्या संवाद है? किसी के लिये यह सिद्धांत कैसे लागू हो सकता है जो आवश्यक रूप से धनवान नहीं है?

_____

_____

_____

_____

हम धनवान हों या गरीब चीजों को हासिल करने की हमारी लालसा हमारे मन को उससे जुदा कर सकती है जो वाकई महत्त्वपूर्ण है और इसे केन्द्रित करना है, बजाय उनपर केन्द्रित करता है जो अस्थायी और क्षणिक है एवं निश्चित रूप से अनंत जीवन के घाटे को कमतर आंकता है।

हम संभवत: आज सोने और चाँदी की वास्तविक मूर्ति के सामने झुककर इसकी कभी पूजा नहीं करते। फिर भी हम अभी भी दूसरे रूप में सोने और चाँदी की पूजा करने के खतरे में हैं।

यह दृष्टान्त संसार के अनेक भागों में इस कदर लागू है, जहाँ पर जीवन पूरी तरह से अधिकारों को हासिल करने के लिये समर्पित है। खुदरा व्यापारी अपने उत्पादों को विश्व स्तरीय रूप में फेरी लगा चुके हैं। उनकी सम्पूर्ण विपणन कूटनीति (दुकानदारी उपाय) ऐसी है कि वह हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि हम खुश नहीं हो सकते या संतुष्ट नहीं हो पाते, जब तक कि हम उसे हासिल नहीं करते, जो वे बेच रहे हैं। एक सफल कम्पनी एक उत्पाद का निर्माण करती है और हमें सोचने पर मजबूर कर देती है कि इसकी हमें जरूरत है, और इसे हमें बेचती है। और सच्चाई यह है: इसने कार्य किया! मसीही भी, जिनकी उम्मीद यह संसार नहीं है, इस छल से सुरक्षित नहीं हैं।

व्यवस्थाविवरण 8: 10-14 पढ़ें। एक चर्च मेम्बर किस प्रकार आतंक के खतरे में हो सकता है जिसके विषय यहाँ पर चेतावनी दी गई है?

_____

_____

आज बाईबल में अथवा हमारे संसार में आप कौन-से उदाहरण पा सकते हैं जिसमें दौलत और भौतिक अधिकारों के संग्रहण ने एक व्यक्ति के

आध्यात्मिकता में, परमेश्वर के प्रेम में, और स्वर्गीय एवं आत्मिक चीजों की लालसा में वृद्धि की? कृपया अपना जवाब कक्षा के साथ साझा करें।

मंगलवार **जनवरी 2**

भौतिकवाद का आकर्षण

विज्ञापन का संसार शाक्तिशाली है। कंपनियाँ अपने उत्पादों की तस्वीरों को हमारे सामने रखने के लिये अरबों खर्च करते हैं। वे अकसर सुन्दर और लुभावने लोगों को, वे जिसे बेच रहे हैं, प्रचार हेतु इस्तेमाल करते हैं। हम उस विज्ञापन को और स्वयं को देखते हैं, उस उत्पाद को नहीं वरन विज्ञापन में उन लोगों-सा होने को देखते हैं।

भौतिकवाद उतना असरदार नहीं होता यदि सक्ष्मता से कामुकता विज्ञापन में बुनी हुई न होती। यह विज्ञापन की अति शक्तिशाली तकनीक है, परन्तु यह मसीहियों के लिये जहर की तरह कार्य करती है जो भौतिकवाद के खतरों के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं, जो हममें से बहुत हैं।

पढ़ें मत्ती 6: 22-24. मसीही विचार और कर्मानुसार आँख किसे दर्शाती है? मसीहियों के तौर पर सूक्ष्म तस्वीरों पर हमारी प्रतिक्रिया कैसी होनी चाहिए जो हमें उपभोग करने को उकसाती है जिसकी हमें वाकई जरूरत नहीं है?

_____

_____

_____

विज्ञापन जो खुदरा व्यवसायियों के उत्पादों पर कामुकता को सम्बद्ध करता है एक सशक्त औजार बन सकता है। खुदरा व्यवसायी उपभोक्ताओं के दिमाग में उत्तेजना पैदा करने के द्वारा अपने उत्पाद को बेचते हैं। अनुभव विशुद्ध कल्पना है पर यह कार्य करता है। यह लगभग रहस्यवादी हो सकता है, यद्यपि क्षणिक तौर पर, लोगों को लेटे हुए जो अस्तित्व के दूसरे क्षेत्र सा लगने लगता है। यह झूठा धर्म बन जाता है जो न ज्ञान और न आत्मिक सत्य देता है, तौभी इसी समय इतना पसंदीदा और आकर्षक होता है कि बहुत से लोग इसे इन्कार नहीं कर सकते। हम इसे चाहते हैं, और महसूस करते हैं कि हम इसके योग्य हैं, अत: क्यों न इसे प्राप्त करें? केवल परमेश्वर वृहद रकम को जानता है जो हमें विश्वास दिलाने के लिये खींची जाती है और जाती रहेगी कि हमें उन वस्तुओं की आवश्यकता है।

"पर मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे" (गला० 5: 16)। यद्यपि हम "शरीर की लालसा" को केवल यौन शब्दावली में सोचने को प्रवृत होते हैं,

कौन-से दूसरे तौर-तरीके हैं जिसमें इस लालसा को पूर्ण करने के खतरे में हम हो सकते हैं?

बुधवार **जनवरी 3**

आत्म-प्रेम

"क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूँ, कि जैसा समझना चाहिए, उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार बांट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे" (रोम० 12:3)। परमेश्वर ने कहा, सुंदरता के कारण तेरा मन फूल उठा था; और विभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी" (यहेज० 28:17) लुसीफर ने स्वयं को धोखा दिया, वास्तव में वह जो था इसकी अपेक्षा वह सोचने लगा कि वह महानत्तम था। जब उसने अपने हृदय में कहा, "मैं परम प्रधान के तुल्य हो जाऊँगा" (यशा० 14:14), उसने आत्माभिलाषा को उजागर किया, अधिकारों का दावा करते हुए जो उसके पास नहीं थे। आत्म-छल और आत्माभिलाषा लुसीफर के पवित्र हृदय की दो विशेषताएँ थीं।

लुसीफर के पतन के विषय ये पदस्थल हमें बतलाना चाहिए कि, विभिन्न तरीकों से मूल पाप अत्ममोह है, जिसे एक शब्द कोष इस प्रकार व्याख्या करता है "स्वयं के प्रति अत्यधिक मोह; आत्म-प्रेम, अहंकार।" किसी पतित मानव में इनकी अपेक्षा आत्मछल के महानतम संकेतकों में कौन-से धोखे हैं? तथापि एक के सोचने की अपेक्षा ये छल अधिक सामान्य हैं। नबूकदनेस्सर घमंड पूर्वक सोचने लगा वह जो था उसके वजाय वह महान था (दानि० 4:30) फरीसियों ने भी इस आकर्षक ख्वाब पर विश्वास करना सीखने लगे (देखें लूका 18:11-12) दौलत भी इसी छल की ओर अग्रसरित कर सकती है यदि हम सतर्क न रहें।

पढ़ें 1तीमु० 6:10. पौलुस यहाँ पर किस खतरे के विषय चेतावनी दे रहा है?

_____

_____

पौलुस तीमुथी को किसी भी प्रकार के बुरे लोगों से सतर्क रहने का निर्देश देता है (2तीमु० 3:1-5), इसमें रुपयों के प्रेमी भी शामिल होते हैं। रुपये का यह प्रेम आत्मावशोषण एवं घमंड के एक आडंबरपूर्ण प्रवृति एवं अति आत्मविश्वास को बढ़ावा दे सकता है। यह इसलिये क्योंकि भौतिकवाद लोगों को व्याप्त कर देता है जिनके पास प्रतिष्ठा के एक गर्वशील समझ के

साथ महान अधिकार हैं। जब किसी के पास रुपये अधिक हैं तो स्वयं के लिये अधिक सोचना सहज है वजाय कि जितना होना चाहिए। आखिरकार हर एक व्यक्ति अमीर होना चाहता है, परन्तु बहुत कम ही लोग इसे कर पाते हैं। इस प्रकार एक अमीर के लिये आत्मलीन होना, घमंड, और डींग मारना सहज है।

पढ़ें फिलिप्पियों 2:3 यह पदस्थल हमें समझने में किस प्रकार मदद करता है क्यों भौतिकवाद और प्रवृतियाँ यह बढ़ावा दे सकता है, मसीही आदर्श के इतने प्रतिकूल हैं?

बृहस्पतिवार **जनवरी 4**

भौतिकवाद का अंतिम व्यर्थता

बहुत से लोग हैं जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं। उनकी पहचान उसके साथ मेल हो चुकी हैं इस तरह जैसे भौतिक अधिकार नहीं हटा सकते।

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 7:6, 1पत० 2:9, यूहन्ना 15:5, एवं गलातियों 2:20, परमेश्वर का स्वामित्व होने का क्या तात्पर्य है और हम अपनी असली पहचान कहाँ पाते हैं?

_____

_____

_____

_____

परमेश्वर कहता है, "मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो.... मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5), संबंध प्रत्यक्ष और सुरक्षित है। "सब सच्ची आज्ञाकारिता हृदय से आती है। यह हृदय है जो मसीह के साथ काम करता है। और यदि हम स्वीकृति देते हैं, वह हमारे विचारों एवं उद्देश्यों के साथ स्वयं को सम्मिलित करेगा, इसलिये उसकी इच्छा के अनुकूल हमारे हृदयों और मनों को मेल करें, कि उसकी आज्ञा पालन जब हम करते हैं हमारी उत्तेजनाओं को कार्यान्वित करते हैं।"- एलेन जी० ह्वाईट, द डिजायर ऑफ एजेस, पेज 668।

दूसरी ओर, भौतिकवाद हमें एक पहचान देता है जो हमारे अधिकारों के साथ समानार्थी है। दूसरे शब्दों में हम अपनी व्याख्या हमारी स्वामित्व के आधार पर करते हैं और हम चीजें इस पृथ्वी की खरीद सकते हैं। याकूब हमें इसके खिलाफ आगाह करता है: "तुम्हारे सोने-चाँदी में काई लग गई है; और वह काई तुम पर गवाही देगी, और आग की नाई तुम्हारा मांस खा जाएगी: तुम ने अन्तिम युग में धन बटोरा है (याकूब 5:3), "बटोरना" का अर्थ है इकट्ठा करना बहुत से खजाने को संचित करना, अधिक महत्त्वपूर्ण, कम या

अधिक यह उन खजाने में है जिसमें बहुत कोई अपनी पहचान पाते हैं (लूका 12: 19-21)।

भौतिकवाद पहचान भ्रम का एक रूप है। इसका तात्पर्य यह कि हम में से बहुतों के लिये हमारी पहचान हमारे अधिकारों के साथ जुड़ जाती है। हमारे अधिकार हमारा परमेश्वर बन जाते हैं (मत्ती 6: 19-21), जैसा एक व्यक्ति ने कहा, "मैं अपनी चीजों (दौलत) के बिना कुछ नहीं हूँ।" कितनी दु:ख की बात कि हम स्वयं को हमारे पार्थिव अधिकारों (दौलत) के द्वारा ही पहचान सकते हैं। किसी का जीवन जीना क्या ही छिछला, क्षणिक, और आखिरकार व्यर्थ है, खासकर उसके लिये जो एक मसीह होने का दावा करता है। क्या हम परमेश्वर के साथ या हमारे अधिकारों के साथ पहचान पाते हैं? आखिरकार यह एक या दूसरा होगा।

आपकी स्वामित्व की चीजों पर आपकी पहचान कितनी अधिक सम्बध है?

शुक्रवार **जनवरी 5**

अतिरिक्त अध्ययन: "आज शत्रु आत्माओं को बहुत सस्ते में खरीद रहा है। तूने स्वयं को शून्य में बेच दिया है, यह पवित्रशास्त्र की भाषा है। एक अपनी आत्मा को संसार की वाहवाही में और दूसरा रुपये के लिये बेच रहा है; एक मूल मनोभावों को प्रसन्न करने के लिये और दूसरा सांसारिक दिलबहलाव के लिये। ऐसे सौदे प्रतिदिन किये जाते हैं। उन्हें बचाने के लिये असीमित कीमत चुकाये जाने के बावजूद शैतान उन्हें सस्ते में खरीदने और मसीह के खून के क्रय के लिये आज्ञा दे रहा है।"-एलेन जी०ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 5, पेज 133।

भौतिकवाद के द्वारा आत्माओं की खरीद और प्रत्येक हृदय के लिये सतही साजो सामान का आकर्षण शैतान का लक्ष्य है। भौतिकवाद बोल नहीं सकता, पर यह प्रत्येक भाषा की जानकारी रखता है। यह अमीर और गरीब दोनों को आनन्द और सन्तुष्टी प्रदान करना जानता है और उन्हें कहने को विवश करता है, "मेरे पास सब कुछ है जो मुझे यहाँ पर जरूरत है; किसी चीज की चिंता क्यों?" इस प्रकार भौतिकवाद दिमाग भ्रष्ट कर देता है; यह लोगों को परमेश्वर पर भरोसा करने के वजाय अपनी स्वामित्व की चीजों पर भरोसा करने को विवश करता है। फिर भी प्रति कारक है "न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है (जकर्याह 4: 6), भौतिकवाद पवित्र आत्मा

के नियंत्रण का सामना नहीं कर सकता जब हम स्वयं को परमेश्वर के सुपुर्द करते और उसके अनुग्रह के द्वारा भौतिकवाद को हमारे जीवन को शासन न करने देने का निश्चय करते हैं।

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

1. कौन-से तौर-तरीके हैं, जिनमें से कुछ खतरों में हम अभी भी पड़ सकते हैं, जब कि हम गरीब हैं अथवा अधिक भौतिक चीजें नहीं है, जैसा हमने इस सप्ताह देखा?
2. कुछ लोग कहते हैं, "मैं रुपयों की परवाह नहीं करता। रुपये मेरे लिये कोई मायने नहीं रखता।" (अक्सर ऐसा कहने वालों के पास काफी पैसे होते हैं)। अधिकतर मामलों में, सामान्यत: क्यों यह सत्य नहीं होता? अर्थव्यवस्थाएँ महत्त्वपूर्ण है; उनकी हमारे जीवनों में भूमिका है। प्रश्न है: रुपये को और रुपये की हमारी आवश्यकता को सही बाईबलीय परिप्रेक्ष्य में हम कैसे रख सकते हैं?
3. "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहाँ कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।" (मत्ती 6: 19-21)। ध्यानपूर्वक पढ़ें यहाँ पर यीशु हमें क्या कहता है। जो वह हमें कह रहा है किस प्रकार भौतिकवाद के खतरे से हम स्वयं को बचाने के लिये एक सशक्त तरीका हो सकता है?